ग्रामीण जीवनशैली और मूल्य: लोकजीवन से समन्वय की ओर

—डॉ0 रत्नर्त्तु: मिश्रा

चन्दन है इस देश की माटी तपोभूमि हर ग्राम है
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा बच्चा राम है।

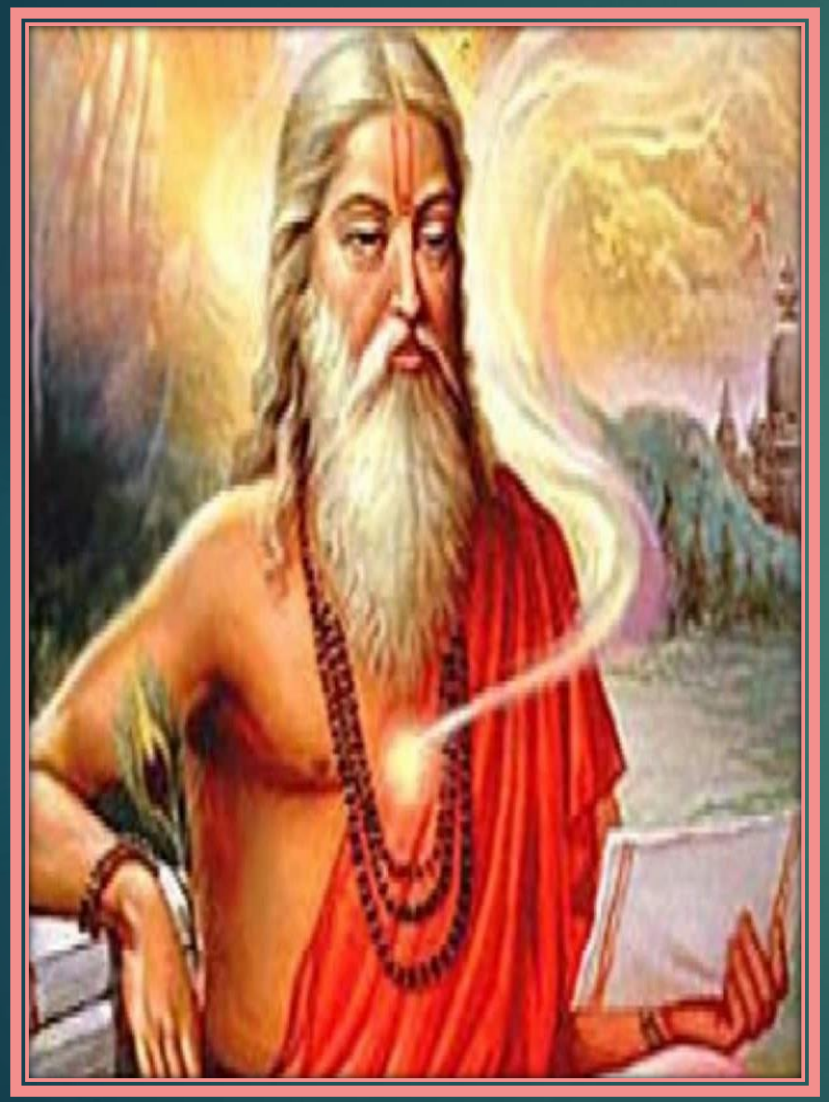

भारतीय संस्कृति के विविध पक्षों के समान ही भारतीय ग्रामीण जीवनशैली भी भारतीय ज्ञान परम्परा पर आधारित है जिसका भारतीय दार्शनिक चिन्तन है।

अतः भारतीय ग्रामीण परिवेश को समझने के लिये भारतीय चिन्तन आधारित सांस्कृतिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इसे पश्चिमी दृष्टिकोण से समझा नहीं जा सकता क्योंकि भारतीय और पश्चिमी चिन्तन में दृष्टिकोण आधारित सांस्कृतिक भेद है।

भारतीय दर्शन जीवन की समस्याओं के प्रति विशेष दृष्टि रखते हैं जो जनसामान्य के जीवन से प्रत्यक्ष सम्बन्ध रखती है। इस दृष्टि द्वारा प्रदत्त जीवन मूल्य भारतीय ज्ञान परम्परा का केन्द्र हैं जो भारतीय जनमानस, चाहे वह नगरीय हो अथवा ग्रामीण, के अन्तस्तल की गहराइयों में व्याप्त है। यही कारण है कि नगरीय तथा ग्रामीण परिवेश के सामान्य से सामान्य यहाँ तक कि निरक्षर व्यक्ति भी दार्शनिक वाक्यों का प्रयोग अपने जीवन में सहजता से करते दिखायी देते हैं।

भारतीय ग्रामीण जीवनशैली पर्यावरण मित्र जीवनशैली है जिसके दर्शन हमें दैनिक ग्रामीण जीवन, कृषि कार्यों के अवसर पर, उत्सवों तथा पर्वों के उल्लास पूर्ण आयोजनों में समन्वय, सहयोग जैसे सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों में होते हैं।

प्राकृतिक पर्यावरण

सामाजिक पर्यावरण

सांस्कृतिक पर्यावरण

भारतीय ग्रामीण जीवन के राजनैतिक मूल्यों में भगवान बुद्ध के गणतान्त्रिक जीवन दर्शन और महात्मा गाँधी के ग्राम स्वराज को समावेशित किया जा सकता है जिसका आदर्श रूप मुंशी प्रेमचन्द की कहानी 'पंच परमेश्वर' में जुम्मन मियाँ और अलगू चौधरी के निष्पक्ष तथा पूर्वाग्रह रहित दायित्वबोध में परिलक्षित होता है।

भगवान बुद्ध ने भारत में विश्व के प्रथम गणतन्त्र की सफलता के सात कारण बताये हैं—

1. संघ की जल्दी–जल्दी सभायें करना तथा उसमें अधिक से अधिक सदस्यों का भाग लेना।
2. कामों को मिलजुल कर पूरा करना।
3. कानून का पालन करना तथा समाज–विरोधी कानूनों का निर्माण न करना।
4. वृद्ध व्यक्तियों के विचारों का सम्मान करना।
5. महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार न करना।
6. स्वधर्म में दृढ़ विश्वास रखना।
7. अपने कर्तव्य का पालन करना।

ग्रामीण जीवनशैली शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य का संरक्षण करती है जिसका आधार ग्रामीण जीवन के सहजता, सहयोग, श्रम, उल्लास, पशु–प्रेम, जीवन संघर्ष की असीमित इच्छा जैसे व्यक्तिगत मूल्य हैं।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

जन्मभूमि से प्रेम भारतीय नगरीय एवं ग्रामीण समाज का एक अनोखा भावात्मक मूल्य है। अँग्रेजों के समय से ग्रामीण जीवनशैली और मूल्यों में व्यापक बदलाव देखने में आये हैं और शहरों के ओर पलायन बढ़ा है तथा ग्राम्य जीवन के प्रति आकर्षण में कमी आयी है। संचार के साधनों की ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँच ने ग्राम्य जीवन के लम्बे समय से चले आ रहे स्वरूप को बड़ी ही गहराई से प्रभावित किया है। फिर भी भारतवर्ष के प्रत्येक नगरीय एवं ग्रामीण नागरिक के अन्तःकरण में मातृभूमि से भावात्मक नाता कहीं न कहीं विद्यमान है।

ग्रामीण जीवन की विशिष्ट स्थानीय संस्कृति को समझते हुये मूल्यों का संरक्षण आज की आवश्यकता है। इसी उद्देश्य के निमित्त इस संकाय सम्वर्द्धन कार्यक्रम का आयोजन किया गया है जिसका लक्ष्य है–

"लोकजीवन से समन्वय"

धन्यवाद